डॉ. अनिरुद्ध प्रसाद
हिन्दी विभाग
महाराजा कालेज, आरा.

28.07.20

तुलसीदास की काव्यकला

प्रश्न : तुलसीदास की काव्य कला पर प्रकाश डालिए।

उत्तर : गोस्वामी तुलसीदास हिन्दी कविता के आकाश में सूर्य के समान थे जिन्होंने अपनी प्रतिभा से हिन्दी के हर कोने को प्रकाशित किया। उनकी कविता में नित नए सौंदर्य के दर्शन होते हैं। तुलसी की कविता का विषय है राम जिसमें सत्यं, शिवम् एवं सुन्दरम का समन्वय मिलता है। उनकी निःशेष मनोवृत्तियां रामाभिमुख होकर जन-मानस में आवृत्त हो गयी हैं। रामचरित मानस के आरंभ में ही तुलसीदासजी कहते हैं — स्वान्तः सुखाय: तुलसी रघुनाथ-गाथा, भाषा निबंधमति मंजुलमातनोति। वहीं उनकी दृष्टि में वही काव्य सफल है जिसमें सुर-सरिता की भाँति सबके लिए हितकर हो, जिसकी भावधारा कवि हृदय से निकलकर सहृदय पाठकों का रसास्वादन हो।

तुलसीदास जी ने जहाँ मनोवृत्तियों का चित्रण किया है, वहाँ कविता कामिनी के हृदय में रसोद्रेक भी किया है। वे केवल मुक्त मनोवैज्ञानिक न थे उन्होंने काव्य के हल्के और गहरे दोनों भावों का कुशलता से चित्रण किया है। रामचरित मानस इन दोनों मनोभावों का स्वाभाविक संयोग देखने को मिलता है। 'गीतावली' काव्यकला की मधुर अभिव्यक्ति है। उसमें जहाँ ब्रजभाषा का माधुर्य है वहीं भावों की कोमलता भी देखने को मिलता है। 'गीतावली' में श्रृंगार की प्रधानता है। वसंत और हिंडोला आदि अवतरणों ने श्रृंगार को और भी अतिरंजित कर दिया है। श्रृंगार रस पाठकों पर प्रभाव छोड़ने में कोई कसर नहीं छोड़ा है। यहाँ रीतिकालीन कवियों के श्रृंगार की भाँति कामुकता नग्न नर्तन देखने को नहीं मिलता श्रृंगार रस अश्लीलता की परिधि से दूर पवित्रता की उच्च भूमि पर उठा दिखलाई देता है।

तुलसीदासजी ने विप्रलंभ श्रृंगार में भी अपनी उद्भट प्रतिभा का परिचय दिया है। जैसे उनकी दृष्टि में विरह, प्रसूत, दुख-पीड़ा भाग्य प्रेरित होती है। सीताजी के हरण के समय भगवान राम का विलाप तुलसी के विरह वर्णन का स्पष्ट प्रमाण है। करुण रस का उद्रेक तो राम के वनवासी होने पर और लक्ष्मण के शक्ति-बाण लगने पर फूट पड़ता है। राम के वनवासी होने पर शोक की छाया केवल मनुष्य के लिए नहीं, पशु-पक्षी भी

विरह से संतप्त हो उठते हैं। राम को रथ में बिठाकर जो घोड़े चित्रकूट जाने हेतु थल से भी अधिक वायु वेग पर भागने लगते हैं। वे बार-बार चाबुक लगाने पर भी थल पर चल नहीं पाते। घोड़ों को जब ऐसी दशा थी तब अयोध्यावासियों की क्या दशा हुयी होगी, यह सोचने वाली बात है।

तुलसीदास के काव्य में इतनी गहराई और व्यापकता है कि वह अपनी अभिव्यक्ति में सुन्दर और सौष्ठव हो जाता है। हृदय के विविध भावों का जितनी गंभीर व्यंजना तुलसीदास के काव्य में मिलती है वह अन्यत्र दुर्लभ है। तुलसी को काव्य-रूप में अभिव्यक्ति की यह अभिव्यंजना स्वयं प्रभु राम से मिली थी। यह अनुभूति तुलसी के काव्य में सर्वत्र बिखरी है।

वीर और वीभत्स का रस का स्थल तो मानो लंका-काण्ड है। शिव धनुष के भंग होने पर चतुर्दिक जो आतंक छा जाता है उसमें भयानक रस का परिपाक हुआ है —

भरे भुवन घोर कठोर रव रविबाजी तजि मारगु चले।
चिक्करहिं दिग्गज डोलि महि अहि कोल कूरम कलमले।।

तुलसी की अनुभूति पक्ष की व्यंजना उनके अन्य ग्रंथों में भी बखूबी हुआ है। इसके साथ बाह्य पक्ष गुण, छंद, अलंकार आदि में भी उन्हें अपूर्व सफलता मिली है। मधुर भावों की योजना एवं छंद-अलंकारों की छटा उनकी इन पंक्तियों में देखने को मिलती है —

'कंकन किंकन नुपूर धुनि सुनि,
कहत लखन सन राम हृदय गुनि।
मनहु मदन दुंदुभी दिन्हीं
मनसा विश्व विजय कर किन्हीं।।'

इस प्रकार तुलसी की रचनाओं में भावों का प्रकाशन इतने कौशल से किया है उसमें प्रस्तुत अलंकारों की आवश्यकता नहीं पड़ती। उनकी कविता में सरल स्वाभाविक सरलता और विदग्धपूर्ण वर्णन है। उनकी प्रतिभा इतनी मूर्धन्य है कि उसमें अलंकारों का समावेश स्वाभाविक रूप से हो जाता है। तुलसीदास ने एक कुशल-कलाकार की तरह अलंकार रत्नों को सरलता से उठाकर अपने काव्य में रख दिया है। इस तरह तुलसी के काव्य में भाव-पक्ष और कला-पक्ष दोनों का उत्तम निर्वाह हुआ है।

P.G semester II
CC – VI
"Tulsi ki Kavyakala"